भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-18 अंक-07 वि. स. 2079 युगाब्द 5124 सितम्बर-2022 वार्षिक चंदा 200/- मूल्य प्रति - 20/-

मार्गदर्शक :

- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

सदस्यता शुल्क : 10 वर्षीय चंदा - रू 2000/- संरक्षक सहयोग राशि - रू 5000/-

जन्म- 27 सितम्बर, 1926 पुण्यतिथि -17 नवम्बर 2015

अशोक सिंघल

हिन्दू जागरण के प्रखर, सूत्रधार श्रीमान।
राष्ट्रभक्त साधक परम, सेवाव्रती महान।।
हिन्दू तन मन हिन्दू जीवन, जग में तेरा नाम।
भक्तिभाव से हम तुम्हें, करते नमन प्रणाम।।

- शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 2,000 की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की आजीवन एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

जीवन में हमारे सामने दो मार्ग हैं, एक है प्रेय और दूसरा है श्रेय, इन दोनों में से किसी एक मार्ग का चयन करके उस पर चलना ही होता है। प्रेय मार्ग हमें आकर्षण में बाँध कर अपनी ओर खींचता है और इस मार्ग पर प्रारम्भ में तात्कालिक सुख और आत्मसंतुष्टि मिलती है परन्तु अन्त में निराशा और दुख ही हाथ लगता है। श्रेय मार्ग इसके एकदम विपरीत है। श्रेय मार्ग प्रारम्भ भले ही अरुचिकर और कठिन लगता है पर बाद में उसकी परिणति अधिक सुख और पूर्णतया सुख शांति में होती है।

धर्म हमें श्रेय मार्ग दिखाता है और उस पर चलने की प्रेरणा देता है। धर्म हमारी दृष्टि को प्रशस्त करता है तथा लोकहित और समाज हित में कार्यरत होने की प्रेरणा देता है। धर्म हमें सिखाता है कि हम अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठें, फल विशेष की अपेक्षा न रखते हुए निःस्वार्थ भाव से कार्य में लगे रहने में ही अपना संतोष और समाधान मानें। वस्तुतः जीवन की सफलता का रहस्य मनुष्य के अपने हृदय में ही छिपा हुआ है। बाह्य जगत का कोई हस्तक्षेप उसे प्रभावित नहीं कर सकता। धर्म हमें इसी सफलता के पथ पर चलने का मार्ग दर्शाता है। हमें इस बात की स्वतन्त्रता प्राप्त है, कि हम कौन सा कर्म करें, कौन सा न करें और किस मार्ग पर चलें, किस पर न चलें। आज हम जो कुछ हैं वह अपने अतीत के कर्मों के फलस्वरूप ही हैं। हमें एक नए भविष्य को निर्मित कर आगे बढ़ने की क्षमता प्राप्त है। इस क्षमता का सदुपयोग करने के लिए शास्त्र हमें निरन्तर प्रेरित करते हैं। ऋग्वेद में एक ऋचा आती है - 'स्वस्ति पंथामनुचरेम्' अर्थात् हम कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण करें। अस्तु आवश्यकता इस बात की है कि शुभ संकल्पों के साथ हम समाज और राष्ट्रहित के कार्यों मे पूर्ण निष्ठा के साथ जुट जाएँ। ऐसे अनेक व्यक्तित्व जिनका स्मरण हम बराबर करते रहते हैं और जिनके आदर्शों के अनुरूप चलने का प्रयत्न भी करते रहते हैं, उन वन्दनीय महापुरूषों में कुछ का संक्षिप्त वर्णन यहाँ पत्रिका में भी किया गया है।

कीर्तिशेष अशोक सिंघल आजीवन अविवाहित रहते हुए संघ के प्रचारक रहे और भारतीय धार्मिक परम्पराओं, मर्यादाओं की रक्षा करते हुए जीवन पर्यन्त दिन-रात सेवा कार्यों में लगे रहे। 1984 में विश्व हिंदू परिषद के महासचिव के दायित्व का निर्वहन करते हुए 200 से ज्यादा मंदिरों का निर्माण कार्य पूरा कराया। उनके मरणोपरान्त आज श्री राम मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है। विहिप की जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति है, उसमें स्व. अशोक सिंघल जी का सर्वाधिक योगदान रहा है। ऐसे निःस्वार्थ सेवाव्रती के पद चिह्नों पर चलकर हम सदा आगे बढ़ते रहें इन्हीं सद्भावनाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

@ शिव

जिस समाज में लोग अपने परिश्रम का पारिश्रमिक अपने ही पास न रखकर समाज को देते हैं उस समाज में, ऐसी एकत्रित पारिश्रमिक की पूंजी के आधार पर समाज संपन्न-समृद्ध बनता है और समाज संपन्न बनता है तो समाज का हर व्यक्ति संपन्न-समृद्ध बनता है। परन्तु जिस समाज में लोग अपने परिश्रम का पारिश्रमिक समाज को न देकर अपने ही पास रखते हैं, उस समाज में कुछ व्यक्ति तो संपन्न-समृद्ध बनते हैं, पर समाज दरिद्र रहता है।

- भगिनी निवेदिता

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प

प्रगति समीक्षा (अगस्त)

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प अपने तृतीय बैच की बालिकाओं के प्रवेश के लिए तत्पर है। चयन प्रक्रिया के अन्तर्गत जुलाई माह में सम्पन्न हुई लिखित प्रवेश परीक्षा के परिणाम के आधार पर दिनांक 16 अगस्त को 33 बालिकाओं को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया, जिसमें से 10 बालिकाओं का चयन किया गया पश्चात् चयनित बालिकाओं के आवास पर भौतिक सत्यापन के उपरांत इन 10 बालिकाओं का चयन सुनिश्चित किया गया। आगामी माह के प्रथम सप्ताह तक चयनित बालिकाओं के स्वागत समारोह की तैयारी है।

पिछले दो वर्षों से हमारे प्रकल्प की समस्त गतिविधियां आनलाइन ही सम्पन्न हो रही थीं परन्तु वर्तमान सत्र से माल एवेन्यू, लखनऊ स्थित न्यास के फ्लैट में चयनित बालिकाओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था की गई है। इसके अतिरिक्त नियमित व्यक्तित्व विकास की श्रृंखला में दिनांक 14 अगस्त को हमारे 75वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर प्रकल्प की 2021 बैच की छात्राओं द्वारा बहुत ही सुन्दर तरीके से आनलाइन समारोह का आयोजन किया गया। सभी उपस्थित छात्राओं ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में भाग लिया। छात्राओं द्वारा कविता पाठ व गीतों के माध्यम से देश की गौरव गाथा को प्रस्तुत किया गया।

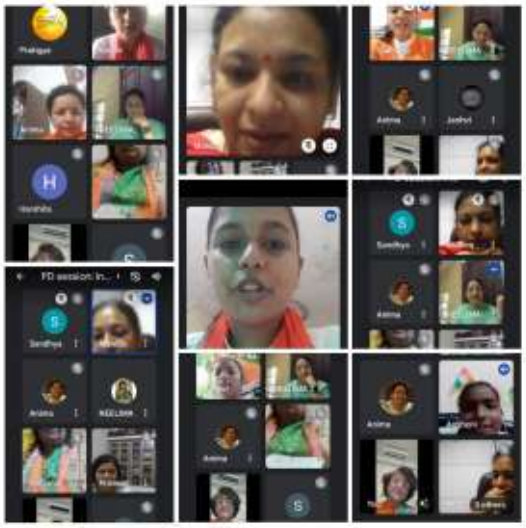

महामना शिक्षण संस्थान

महामना शिक्षण संस्थान में स्वतंत्रता दिवस समारोह

स्वतंत्रता दिवस के अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर आई एम् एम् के प्रोफेसर डॉ डी डी गुप्ता जी का संस्थान में मुख्य अतिथि के रूप में आगमन हुआ। झंडारोहण के उपरांत दीप प्रज्ज्वलन और वंदना का कार्यक्रम संपन्न हुआ। संस्थान के सचिव श्री रंजीव तिवारी जी ने मुख्य अतिथि, संस्थान के सदस्य गण, छात्रावास संचालक और सहसंचालक का परिचय कराया। छात्रों ने अपना अपना परिचय स्वयं कराया। स्वागत व अभिनन्दन के पश्चात् प्रोफेसर डी डी गुप्ता जी ने कहा कि एक मनुष्य स्वाधीन तब होता है जब वह स्वतंत्रता को सर्वांगीण विकास के रूप में आत्मसात करता है। व्यक्ति को जीवन में अपने लक्ष्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठ व समर्पित होना चाहिए। मानसिक स्वतंत्रता के साथ विचारों की स्वतंत्रता होनी चाहिए। व्यक्ति को अपने अंदर से बालपन को निकलने नहीं देना चाहिए। शारीरिक चपलता व सक्रियता पर जीवन भर ध्यान देना चाहिए। शारीरिक गतिबिधि व्यक्ति के विकास में एक अहम् हिस्सा है। प्रोफ़ेसर डी डी गुप्ता ने संस्थान में पढ़ने वाले छात्रों का आह्वान किया कि सभी छात्र संस्थान के प्रति संकल्पित हों तथा सदैव ध्यान रखें कि संस्थान अपने उद्देश्य, कार्य और लक्ष्य के प्रति कभी शिथिल न हो। आने वाले समय में भी मेधावियों को अवसर मिलता रहे। सभी छात्रों को अपने जीवन में सहयोग की भावना, मितव्ययिता, संयम एवं श्रम के भाव को प्रमुखता से अपनाना चाहिए।

धार्मिक स्वंत्रता पर प्रोफ़ेसर डी० डी० गुप्ता, जो अपने उद्बोधन से छात्रों को आगाह किये कि हिन्दू धर्म पर अपने देश में ही नहीं विदेशो में भी षड्यंत चल रहा है। इस पर सतर्क रहकर जनमानस एवं युवा पीढ़ी को जागरूक करना होगा, और अपने हिन्दू धर्म को उच्चतम शिखर पर पहुँचाने का प्रयास प्रत्येक भारतीय को करने के लिए प्रेरित करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को सर्वांगीण विकास में बचत की आदत, निवेश की आदत, संयमित दिनचर्या, स्वाध्याय की प्रवृत्ति को अपनाना सर्वोत्तम कार्य है जिसे छात्र अपने जीवन में आत्मसात करें।

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली

अक्षय सेवा प्रकल्प के 2000 दिन

अक्षय सेवा प्रकल्प तो अब दो हजार से अधिक दिन हो गए हैं अपनी सेवाएँ देते हुए। दिल्ली में तीन प्रमुख अस्पतालों के निकट प्रतिदिन दोपहर का भोजन वितरित किया जाता है। इन 2000 दिनों में लगभग 45 लाख लोग इस सेवा का लाभ ले चुके हैं। प्रतिकूल मौसम जैसे वर्षा के कारण भी यह बाधित नहीं होता और अपने तय समय और स्थान पर ही होता है। आप सभी से अनुरोध है कि आप भी इस भोजन वितरण की व्यवस्था में परिवार के साथ भाग लेकर पुण्य कमाएं और मानसिक शान्ति प्राप्त करें।

इन तीन अस्पतालों में से एक, राम मनोहर लोहिया अस्पताल (RML) के निकट होने वाले वितरण का दायित्व प्रसिद्ध एवं सेवाभावी उद्योगपति श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल जी ने लिया हुआ है जिसे वे पूरी तन्मयता से निभा रहे हैं। समाज की सेवा के लिए चलने वाले अनेक प्रकल्पों जिनमें न्यास द्वारा संचालित अनेक प्रकल्प भी सम्मिलित हैं जिनके लिए श्री अग्रवाल जी आर्थिक सहयोग करते रहते हैं। भगवत कृपा उनपर बनी रहे और इससे प्रकार से समाज के कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहे ऐसी ही हम सब की इच्छा है।

अक्षय सेवा प्रकल्प के कार्यकर्ताओं के लिए आज का दिन न भूलने वाला है। यूनाइटेड बिज़नेस प्राइवेट लिमिटेड के एक उच्चाधिकारी श्री जी एस तंवर ने परिवार सहित आज अपने बेटे श्री निखिल तंवर की याद में उसे श्रद्धांजलि देते हुए भोजन वितरण में भाग लिया। प्रिय निखिल का लम्बी बीमारी के बाद अभी 3-4 दिन पूर्व ही देहांत हुआ है। श्री तंवर जी ने एक नया मार्ग, एक नई दिशा समाज को दिखाई है अपने परिवार के एक सदस्य को खोने पर उस दर्द को भी गरीबों को खाना खिलाते हुए भूलने का प्रयत्न करते हुए। उनके साथ उनके सहकर्मी रोटरी क्लब के श्री राकेश जी और न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार किला जी भी थे।

न्यास और प्रकल्प के सभी पदाधिकारी उनके इस संकल्प को नमन करते हैं और भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वो श्री तंवर जी को इस असीम दुःख को सहन करने की शक्ति दे और प्रिय निखिल को अपने चरणों में स्थान दे।

एम्स विश्राम सदन, दिल्ली

सौभाग्य से 26 अगस्त 2022 को Institute of Chartered Accountants of India's (ICAI) के अध्यक्ष CA डॉ देबाशिष मित्रा और Central Council Member CA डॉ संजीव सिंघल जी का शुभागमन न्यास द्वारा संचालित एम्स विश्राम सदन में हुआ। न्यास के कोषाध्यक्ष और विश्राम सदन प्रकल्प की संचालन समिति के संयोजक CA डॉ रामअवतार किला जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। किला जी ने आगंतुकों को पूरे परिसर का भ्रमण कराते हुए न्यास द्वारा दी जा रही सुविधाओं का भी अवलोकन कराया। दोनों अतिथि सदन में रोगियों और उनके सहायकों को दी जा रही सुविधाओं को देख अभिभूत हुए। उन्होंने न्यास और न्यास से जुड़े लोगों एवं संचालन समिति के कार्यकर्ताओं के प्रयत्नों की सराहना करते हुए कहा कि समाज के वंचित वर्ग के लिए वे सेवा का महान कार्य कर रहे हैं। उन्होंने न्यास के कार्यों के उज्जवल भविष्य की कामना की। आगंतुक रजिस्टर में भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए। सदन के प्रबंधक श्री प्रमोद जी और किला जी के सुपुत्र श्री आशीष किला जी भी उपस्थित रहे।

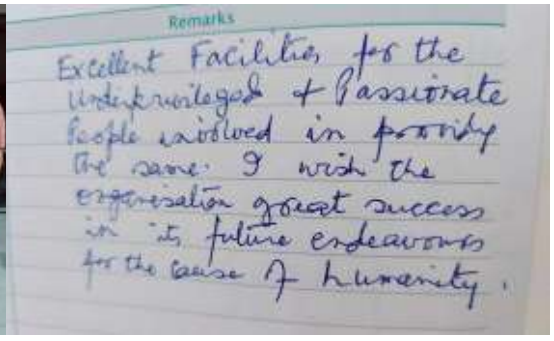

हमारे यहाँ माना गया है कि समाज को अपनेपन के भाव से देना, यह समाज का ही है, उसे लौटाना यानि जीवन सार्थक होना। समाज से हमें बहुत कुछ मिलता है, उसे वह वापिस लौटाने को ही धर्म कहा गया है। रिलिजन या उपासना इससे अलग है। उपासना धर्म के लिए होती है। धर्म का अर्थ है, प्रत्यक्ष आचरण करना, समाज को लौटाना। समाज को देना, यह धर्मादा है और समाज को लौटाना, यह धर्म है।

अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या

न्यास के नए प्रकल्प अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या ने 4 जुलाई 2022 से विधिवत रूप से कार्य प्रारम्भ किया है। सोमवार से शनिवार तक चलने वाले इस संस्थान में बहुत जल्द ही प्रतिदिन आने वाले रोगियों की संख्या 150 से भी अधिक होने लगी है। संस्थान के सचिव डॉ सुशील उपाध्याय जी लगभग हर सप्ताहांत लखनऊ से अयोध्या आकर संस्थान का निरीक्षण करते हैं। हर मास के दूसरे रविवार को KGMU लखनऊ के कुछ नेत्र विशेषज्ञों को भी साथ ले जाते हैं। कल अर्थात 28 अगस्त को उनके साथ KGMU लखनऊ के एसोसिएट प्रोफेसर प्रमोद कुमार के नेतृत्व में नेत्र विशेषज्ञों का एक दल संस्थान में रहा और उन्होंने लगभग 150 रोगियों का उपचार किया। संस्थान के सह-संयोजक श्री राजेश जी भी साथ रहे। वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों का आगमन रोगियों के लिए एक वरदान के समान है।

नेत्र विशेषज्ञों द्वारा अपने कीमती समय में से इतना समय निकालने और लखनऊ से आकर अपनी सेवा देने के लिए न्यास के सभी पदाधिकारियों और संस्थान की संचालन समिति की ओर से डॉ प्रमोद कुमार और उनके सभी सहयोगियों का हृदय से आभार। आशा है आगे भी सेवा के इस पुनीत कार्य में उनका सहयोग हमें मिलता रहेगा।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

पावन गंगा से 250 मीटर के दूरी पर और ऋषिकेश एम्स के निकट रोगियों और उनके सहायकों के लिए बनने वाले माधव सेवा विश्राम सदन का भूमि पूजन एवं शिलान्यास का भव्य कार्यक्रम गत 12-13 जून को ऋषिकेश में आयोजित हुआ। शिलान्यास का कार्य संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य मा. भैय्याजी जोशी के सानिध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित समारोह में मा. मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह जी धामी, योग गुरु बाबा रामदेव जी, पूज्य संत श्री विजय कौशल जी महाराज सहित समाज के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

देवभूमि ऋषिकेश में बनने वाले इस भवन हेतु अनेक दानदाताओं ने अपना आर्थिक सहयोग न्यास को दे दिया है और अनेक ऐसे महानुभाव जिन्होंने 12-13 जून को अपने द्वारा होने वाले सहयोग की जानकारी दी थी उनका भी सहयोग धीरे धीरे न्यास को प्राप्त हो रहा है। अनेक दानदाताओं ने एक तय राशि नियमित अवधि में लगातार देने का तय किया है। इन सभी महानुभावों के द्वारा इस सामाजिक प्रकल्प के महत्त्व को समझते हुए आगे आकर जुड़ने के कारण न्यास और प्रकल्प के पदाधिकारियों को पूर्ण विश्वास है कि इस पवित्र कार्य में समाज के सामर्थ्यवान बन्धु अर्थ की नियमित पूर्ति द्वारा कार्य को अनवरत आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे।

जुलाई मास में निर्माण कार्य के लिए निविदा प्रक्रिया के माध्यम से कुछ निर्माण कंपनियों को चुना गया और कई सत्रों की चर्चा के पश्चात एक का चयन किया गया। अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर के बाद अगस्त मास में कार्य प्रारम्भ हुआ। निर्माण कार्य द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है। प्रकल्प के प्रमुख कार्यकर्ता नियमित अंतराल पर वहां जाकर कार्य की प्रगति का निरीक्षण करते हैं और आवश्यक निर्देश देते हैं।

आशा है समाज के सहयोग से हम 2023 के अंत तक इस भवन का लोकार्पण करने में हम सफल होंगे।

एक दानदाता से ऋषिकेश प्रकल्प हेतु सहयोग

ऋषिकेश प्रकल्प हेतु अनुबंध पत्र हस्ताक्षरित

निर्माण कार्य प्रगति पर

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन की स्थापना प्रस्तावित है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :

MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या CSR00004454

80G में न्यास की पंजीकरण संख्या AAATB1049GF20217

न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या 136550134

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली

A/C: 40692412361

IFSC : SBIN0000625

भाऊराव देवरस स्मृति छात्रवृत्ति योजना

न्यास की योजना से प्रतिवर्ष उत्तर पूर्व के राज्यों, जम्मू कश्मीर और अन्य वनवासी क्षेत्रों के निर्धन विद्यार्थियों की बिना रूकावट पढ़ाई के उद्देश्य से छात्रवृत्ति दी जाती है। प्रतिवर्ष 200 से अधिक छात्र-छात्राओं को यह छात्रवृत्ति दी जाती है। वर्तमान में कक्षानुसार दी जाने वाली छात्रवृत्ति की राशि है :

प्राथमिक कक्षा	:	रू 3000/-
माध्यमिक कक्षा	:	रू 5000/-
हाईस्कूल	:	रू 7000/-
इंटरमीडिएट	:	रू 8000/-
आई आई टी/डिप्लोमा एवं स्नातक	:	रू 10,000/-
परास्नातक	:	रू 12,000/-
प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी हेतु	:	रू 15,000/-
इन्जीनियरिंग	:	रू 18,000/-
मेडिकल	:	रू 20,000/-

न्यास की इस योजना में सहकार के इच्छुक महानुभाव कृपया 9811068375 पर संपर्क करें। आप एक या अधिक विद्यार्थियों के लिए सहयोग कर सकते हैं।

समर्थ भारत त्रिलोकपुरी केंद्र - उद्घाटन समारोह

समर्थ भारत के केन्द्रों में 9 अगस्त को एक नए केंद्र त्रिलोकपुरी के उद्घाटन के साथ ही बढ़ोत्तरी हो गयी है। इस केंद्र में महिलाओं के लिए कटिंग एवं सिलाई का प्रशिक्षण दिया जायेगा। यह कोर्स तीन माह का होगा। यह कोर्स पूर्ण करने के बाद प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली महिलाओं को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जाएगा।

इस केंद्र का उदघाटन समारोह 9 अगस्त को 31 ब्लॉक एक्स्ट्रा, बस्ती विकास केंद्र, त्रिलोकपुरी, नई दिल्ली में हुआ। कार्यक्रम में प्रकल्प के मार्गदर्शक श्रीमान् कुलभूषण आहूजा जी (दिल्ली प्रान्त संघचालक - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे - श्रीमती प्रियंका कश्यप जी (DCP - East Delhi), श्रीमान् राजीव कुमार त्यागी जी (SDM - Mayur Vihar), श्रीमान् राजीव लुथरा जी (Chairman - ASN School), श्रीमती स्वर्णिमा लुथरा जी (Principal - ASN School) और श्रीमान् अशोक बंसल जी (CMD, Nextra Developers)। पूर्वी विभाग के मा. विभाग संघचालक श्रीमान् सुनील कक्कड़ जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मयूर विहार जिला के मा. जिला संघचालक श्रीमान् विरेश कुमार जी, एक्सपोर्ट हाउस की मालिक श्रीमती यशिका गुप्ता जी, मयूर विहार जिला के प्रधान श्रीमान् सुनील गोयल जी, गुप्ता प्रोपर्टीज - द्वारका के श्रीमान् भारत गुप्ता जी और वाल्मीकि समाज के अध्यक्ष श्रीमान् शीशराम जी की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

दिनांक 17 अगस्त को नरेन्द्र नाथ मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा संचालित चित्रकला ट्रेनिंग सेंटर, चौपाल, शाम नगर, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली में एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का विषय था - केंद्र पर हेयर स्टाइलिस्ट बैच और AC/Refrigerator बैच के विषय में जागरूकता पैदा करना।

सुयश कार्यक्रम में समर्थ भारत का स्टाल

दिनांक – 21 अगस्त को डॉ. आम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, जनपथ, नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली प्रान्त द्वारा आयोजित सुयश – समर्पित युवा, समर्थ समाज कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें समाज उपयोगी युवा शक्ति के द्वारा अनुभव कथन हुआ तथा परम पूज्यनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत का समाज परिवर्तन की गति बढ़ाने में हमारी भूमिका विषय पर व्याख्यान हुआ। इस कार्यक्रम में भाऊराव देवरस सेवा न्यास ने अपने प्रकल्प समर्थ भारत के साथ मिलकर अपना स्टाल लगाया। इस स्टाल के माध्यम से कार्यक्रम में आये हुए कार्यकर्ताओं को न्यास और समर्थ भारत के कार्यों के बारे में जानकारी दी गई।

स्वतंत्रता दिवस उत्सव – इस वर्ष का स्वतंत्रता दिवस समारोह हमारे सभी केंद्र जिनमें प्रशिक्षण चल रहा था उन पर प्रशिक्षार्थियों के साथ मनाया गया। अनेक स्थानों पर इस अवसर पर प्रशिक्षार्थियों के द्वारा गीत व नृत्य की प्रस्तुति भी हुई। इस समारोह के कुछ चित्र संलग्न हैं।

सैनिक फार्म, संगम विहार केंद्र – इस केंद्र में एक नए कौशल GST, Tally और Account Asst. का दो माह का प्रशिक्षण जून में प्रारम्भ हुआ था और यह 12 अगस्त को समाप्त हुआ। इस कोर्स में PCTI संस्था के माध्यम से NSDC का प्रमाणपत्र दिया जाएगा। इस केंद्र में 22 प्रशिक्षार्थियों को सुश्री ज्योती शर्मा जी द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस माह – Payroll, TDS and Detailed process of GST विषय पढ़ाये गए।

ब्रह्मपुरी केंद्र – ब्यूटिशियन कोर्स – इस केंद्र में ब्यूटिशियन कोर्स के तीसरे बैच का प्रशिक्षण 2 2 प्रशिक्षार्थियों के साथ चल रहा है। यहाँ पर सुश्री कंचन रानी जी के द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह कोर्स 01 जून से प्रारम्भ हुआ है और तीन माह पश्चात 31 अगस्त को पूर्ण हो गया। अगस्त माह के अंत में प्रशिक्षार्थियों की परीक्षा आयोजित की गई।

कड़कड़डूमा केंद्र प्रशिक्षण गतिविधियाँ – ब्यूटिशियन कोर्स - इस कोर्स में 6 जून से 2 2 प्रशिक्षार्थियों को श्रीमती निधि दीक्षित जी प्रशिक्षण दे रही हैं। तीन माह के पश्चात 05 सितंबर को यह कोर्स पूर्ण होगा। अगस्त माह में हेयर स्टाइल, हेयर स्पा और हेयर पर्म का प्रशिक्षण हुआ।

पहाड़गंज केंद्र – इस केंद्र में GST, Tally और Account Asst. का 2 माह का भैया और बहनों का सांगिक प्रशिक्षण १ जुलाई को प्रारम्भ हुआ था। इस कोर्स में PCTI संस्था के माध्यम से NSDC का प्रमाणपत्र दिया जाएगा। इस केंद्र में 16 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया और इसका प्रशिक्षण श्रीमान नितिन गोला जी के द्वारा दिया गया। यह प्रशिक्षण 31 अगस्त को पूर्ण हो गया। आशा है सभी प्रशिक्षार्थी यहाँ प्राप्त प्रशिक्षण की सहायता से अपने जीवन में सफलता पूर्वक आगे बढ़ सकेंगे।

रघुबीर नगर प्रशिक्षण केंद्र – ब्यूटिशियन कोर्स – इस केंद्र में ब्यूटिशियन कोर्स के तीसरे बैच का त्रैमासिक प्रशिक्षण 1 जुलाई को प्रारंभ हुआ था। यह प्रशिक्षण सुश्री रंजीता संधु जी के द्वारा दिया जा रहा है। इस केंद्र में 22 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। यह प्रशिक्षण 30 सितंबर को पूर्ण हो जायेगा। अगस्त माह में बेंडर कर्ल्स, हेयर कर्लिंग,

बालों के प्रकार और उनके उपचार तथा हेयर रेबोंडिंग आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया गया। सभी प्रशिक्षार्थियों ने बड़ी तन्मयता से इसमें भाग लिया।

तोताराम बाज़ार प्रशिक्षण केंद्र – ब्यूटिशियन कोर्स – इस केंद्र में ब्यूटिशियन कोर्स के पहले बैच का प्रशिक्षण 8 अगस्त को प्रारंभ हुआ। यह प्रशिक्षण श्रीमती सुदेश जी के द्वारा दिया जा रहा है। इस केंद्र में 24 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। यह प्रशिक्षण तीन माह के बाद 7 नवम्बर को पूर्ण हो जायेगा। अगस्त माह में हेयर स्टाइल, वैक्सिंग, हॉट रोल्स, हेयर कलरिंग और आई-मेकअप का प्रशिक्षण दिया गया प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षण के समय प्रशिक्षार्थियों को भी प्रैक्टिस का मौका दिया गया।

समर्थ भारत की पहल का असर

मेरा नाम देवराज सिंह है। मैं अपना स्वयं का व्यवसाय करता था पर कोरोना महामारी के दौरान मेरा व्यवसाय बंद हो गया और मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ख़राब हो गयी। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ। तभी मेरे एक मित्र ने मुझे समर्थ भारत और उसमें चलने वाले कोर्स के बारे में बताया। मैंने ए सी और रेफ्रीजिरेटर कोर्स के लिए 6 दिसम्बर 2021 को न्यू अशोक नगर केंद्र में अपना पंजीकरण करवाया। हमारी ट्रेनिंग 1 माह की थी जिसमें हमें अच्छी तरह से सिखाया गया। ट्रेनिंग पूरी होने के बाद मैं एक कंपनी (अर्बन क्लेप) में इंटरव्यू देने के लिए गया जहाँ पहली बार में ही मेरा सिलेक्शन हो गया। मैंने उस कंपनी के साथ जुड़कर काम शुरु किया और अब मैं 50 से 60 हजार रुपये महीने के कमा लेता हूँ। मैं अब अपने परिवार का भरण पोषण अच्छी तरह से कर पा रहा हूँ।

प्रेरक प्रसंग

एक दिन पानी से भरे कलश के ऊपर रखी कटोरी कलश से बोली- "कलश! यह पक्षपात क्यों? जो भी बरतन तुम्हारे पास आता है, तुम उसको जल से भर देते हो, पर मुझ पर कोई अनुग्रह नहीं करते, जबकि मैं हमेशा तुम्हारे साथ मौजूद हूँ। कलश ने उत्तर दिया - "बहन! जो मेरे पास ग्रहण करने के लिए आता है, मैं उसे संतुष्ट करके भेजता हूँ, परंतु तुम अभिमान के साथ मेरे सिर पर चढ़ी रहती हो तो मै तुम्हारी क्या मदद कर पाऊँगा? तुम अभिमान छोड़ो, अपनी पात्रता सिद्ध करो तो मैं तुम्हें अभी भर दूँ।" कलश का कहा कटोरी की समझ में आ गया कि वस्तुतः पूर्णता की प्राप्ति पात्रता होने पर सिद्ध होती है।

पावन स्मृति - सितम्बर

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

1 सितम्बर	जन्म-दिवस	हिन्दी भक्त फादर कामिल बुल्के
2 सितम्बर	बलिदान-दिवस	अनाथ बन्धु एवं मृणेन्द्र दत्त, बलिदानी (राष्ट्रभक्त)
4 सितम्बर	जन्म-दिवस	दादाभाई नौरोजी, स्मरणीय व्यक्तित्व
5 सितम्बर	जन्म-दिवस	डॉ. राधाकृष्णन, भूतपूर्व राष्ट्रपति-शिक्षाविद्
7 सितम्बर	पुण्य-तिथि	गुरु नानकदेव, सिख पन्थ के प्रवर्तक
9 सितम्बर	जन्म-दिवस	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, युग प्रवर्तक कवि-लेखक
10 सितम्बर	बलिदान-दिवस	बाघा जतिन (ज्योतिन्द्रनाथ मुखर्जी) क्रान्तिकारी
11 सितम्बर	जन्म-दिवस	विनोबा भावे, भूदान यज्ञ के प्रणेता
12 सितम्बर	पुण्य-तिथि	सुब्रह्मण्यम भारती- तमिल काव्य में राष्ट्रवाद के प्रणेता
14 सितम्बर	बलिदान-दिवस	लाला जयदयाल, राष्ट्रभक्त
15 सितम्बर	जन्म-तिथि	विश्वेश्वरैया- आधुनिक विश्वकर्मा
17 सितम्बर	जन्म-तिथि	हनुमान प्रसाद पोद्दार- धर्मग्रन्थों के प्रसारक
18 सितम्बर	बलिदान-दिवस	राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह- राष्ट्रभक्त बलिदानी
19 सितम्बर	जन्म-दिवस	स्वामी सत्यमित्रानन्द, संस्थापक-भारत माता मन्दिर
20 सितम्बर	जन्म-तिथि	आचार्य श्रीराम शर्मा, युग निर्माण योजना के जनक
21 सितम्बर	पुण्य-तिथि	मा. मोरोपन्त पिंगले, गो-चिन्तक
24 सितम्बर	जन्म-तिथि	भीकाजी कामा, तिरंगे की प्रथम निर्माता
25 सितम्बर	जन्म-तिथि	पं. दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद के प्रणेता
27 सितम्बर	जन्म-तिथि	माँ अमृतानन्दमयी, धर्म जागरण, उपदेशिका
27 सितम्बर	जन्म-तिथि	अशोक सिंहल, हिन्दू जागरण के सूत्रधार
28 सितम्बर	जन्म-तिथि	लता मंगेशकर, स्वर साम्राज्ञी

हिन्दू जागरण के सूत्रधार : अशोक सिंहल (27 सितम्बर, 1926 - 17 नवम्बर, 2015)

श्री राम जन्मभूमि आन्दोलन के प्रणेता श्री अशोक सिंहल जी को संन्यासी योद्धा भी कह सकते हैं और सन्त सिपाही भी, पर वे स्वयं को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक प्रचारक ही मानते थे। अशोक जी का जन्म आगरा में एक सम्पन्न उद्योगपति परिवार में हुआ था। बालपन से ही उन्हें हिन्दू धर्म के प्रति आस्था थी। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी पढ़ी और उससे भारत के हर क्षेत्र में सन्तों की समृद्ध परम्परा एवं आध्यात्मिक शक्ति से उनका परिचय हुआ।

1942 में प्रयाग में पढ़ते समय रज्जू भैया ने उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से कराया। इस प्रकार शाखा जाने का जो क्रम शुरू हुआ, तो फिर वह बढ़ता ही गया।

उन्होंने अपना जीवन संघ कार्य हेतु समर्पित करने का निश्चय कर लिया। बचपन से ही अशोक जी की रुचि शास्त्रीय गायन में रही और संघ के अनेक गीतों की लय उन्होंने ही बनाई। 1948 में संघ पर प्रतिबन्ध लगा, तो अशोक जी सत्याग्रह कर जेल गये। वहाँ से आकर उन्होंने B.Engg. अन्तिम वर्ष की परीक्षा दी और प्रचारक बन गये। अशोक जी की श्री गुरुजी से बहुत घनिष्ठता रही। प्रचारक जीवन में लम्बे समय तक वे कानपुर रहे। यहाँ उनका सम्पर्क श्री रामचन्द्र तिवारी नामक एक विद्वान् से हुआ। वे गृहस्थ होते हुए भी सिद्ध सन्त थे। वेदों के प्रति उनका ज्ञान विलक्षण था। आपातकाल के बाद वे दिल्ली के प्रान्त प्रचारक बनाये गये। 1981 में डा० कर्णसिंह के नेतृत्व में दिल्ली में एक विराट हिन्दू सम्मेलन हुआ, पर उसके पीछे शक्ति अशोक जी और संघ की थी। उसके बाद अशोक जी को विश्व हिन्दू परिषद् का कार्य सौंपा गया। उन्होंने परिषद् के काम में धर्म जागरण, सेवा, संस्कृत, परावर्तन आदि अनेक नये आयाम जोड़े। इन आयामों में सबसे महत्त्वपूर्ण है श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन, जिससे परिषद का काम गाँव- गाँव तक पहुँच गया। इसने देश की सामाजिक और राजनीतिक दिशा ही बदल दी। भारतीय इतिहास में यह आन्दोलन एक मील का पत्थर है। 17 नवम्बर, 2015 को सिंघल जी का निधन हो गया। आज हम उनके प्रति आदर सहित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके पदचिन्हों पर चलने का प्रयत्न करने का संकल्प करते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर, 1916 - 11 फरवरी, 1968)

एकात्म मानववाद के प्रणेता

दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म अपने नाना पण्डित चुन्नीलाल शुक्ल के घर हुआ। इनके पिताश्री भगवती प्रसाद ग्राम नगला चन्द्रभान, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। तीन वर्ष की अवस्था में ही उनके पिताजी का तथा आठ वर्ष की अवस्था में माताजी का देहान्त हो गया। चौदह वर्ष की आयु में इनके छोटे भाई शिवदयाल का भी देहान्त हो गया। अतः उनका पालन पोषण उनके मामा ने ही किया। दीनदयाल सदा प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होते थे। कक्षा आठ में उन्होंने अलवर बोर्ड, मैट्रिक में अजमेर बोर्ड तथा इण्टर में पिलानी में सर्वाधिक अंक पाये थे। संघ के उत्तर प्रदेश के प्रचारक श्री भाऊराव देवरस से संपर्क में आने के बाद वे संघ की ओर खिंचते चले गये। एम.ए. करने के लिए वे आगरा आये पर घरेलू परिस्थितियों के कारण एम.ए. की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाये। प्रयाग से इन्होंने एल.टी. की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। संघ के तृतीय वर्ष की बौद्धिक परीक्षा में उन्हें पूरे देश में प्रथम स्थान मिला था।

अपनी मामी जी के आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी। उसमें भी वे प्रथम रहे पर तब तक वे नौकरी और गृहस्थी के बन्धन से मुक्त रहकर संघ को सर्वस्व समर्पण करने का मन बना चुके थे। वे राष्ट्रीय विचारों वाले एक नये राजनीतिक दल का गठन करना चाहते थे। उन्होंने संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी से सम्पर्क किया। गुरुजी ने दीनदयाल जी को उनका सहयोग करने को कहा। इस प्रकार भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। दीनदयाल जी प्रारम्भ में उसके संगठन मन्त्री और फिर महामन्त्री बनाये गये। 1953 के कश्मीर सत्याग्रह में डा० मुखर्जी की रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मृत्यु के बाद जनसंघ की पूरी जिम्मेदारी दीनदयाल जी पर आ गयी। वे एक कुशल संगठक, वक्ता, लेखक, पत्रकार और चिन्तक भी थे। लखनऊ में राष्ट्रधर्म प्रकाशन की स्थापना उन्होंने ही की थी। एकात्म मानववाद के नाम से उन्होंने नया आर्थिक एवं सामाजिक चिन्तन दिया, जो साम्यवाद और पूँजीवाद की विसंगतियों से ऊपर उठकर देश को सही दिशा दिखाने में सक्षम है। उनके नेतृत्व में जनसंघ नित नये क्षेत्रों में पैर जमाने लगा। 1968 में कालीकट अधिवेशन में वे सर्वसम्मति से जनसंघ के अध्यक्ष बनाये गये। चारों ओर जनसंघ और दीनदयाल जी के नाम की धूम मच गयी। यह देखकर विरोधियों के दिल फटने लगे। 11 फरवरी, 1968 को वे लखनऊ से पटना जा रहे थे कि रास्ते में किसी ने उनकी हत्या कर मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर लाश नीचे फेंक दी। इस प्रकार अत्यन्त रहस्यपूर्ण परिस्थिति में एक मनीषी का निधन हो गया।

श्री सुब्रह्मण्यम भारती

(11 दिसम्बर, 1882 - 12 सितम्बर, 1921)

तमिल काव्य में राष्ट्रवाद के प्रणेता

सुब्रह्मण्यम का जन्म एट्टयपुरम् (तमिलनाडु) में हुआ था। पाँच वर्ष की अवस्था में ही वे मातृविहीन हो गये। इस दुख को भारती ने अपने काव्य में ढाल लिया। इससे उनकी ख्याति चारों ओर फैल गयी। स्थानीय सामन्त के दरबार में उनका सम्मान हुआ और उन्हें 'भारती' की उपाधि दी गयी। 11 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह कर दिया गया। अगले साल पिताजी भी चल बसे। अब भारती पढ़ने के उद्देश्य से अपनी बुआ के पास काशी आ गये। चार साल के काशीवास में भारती ने संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया। अंग्रेजी कवि शैली से वे विशेष प्रभावित थे। उन्होंने एट्टयपुरम् में 'शेलियन गिल्ड' नामक संस्था भी बनाई तथा 'शेलीदासन्' उपनाम से अनेक रचनाएँ लिखीं। काशी में ही उन्हें राष्ट्रीय चेतना की शिक्षा मिली जो आगे चलकर उनके काव्य का मुख्य स्वर बन गयी। काशी में उनका सम्पर्क भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा निर्मित 'हरिश्चन्द्र मण्डल' से रहा।

भारती ने अपने भाषण में नारी शिक्षा, समाज सुधार, विदेशी का बहिष्कार और स्वभाषा की उन्नति पर जोर दिया। उनका प्रिय गान बंकिमचन्द्र का वन्देमातरम् था। भारती ने उस गीत का उसी लय में तमिल में पद्यानुवाद किया, जो आगे चलकर तमिलनाडु के घर-घर में गूंज उठा। सुब्रह्मण्यम भारती ने जहाँ गद्य और पद्य की लगभग 400 रचनाओं का सृजन किया, वहाँ उन्होंने 'स्वदेश मित्रम', 'चक्रवर्तिनी', 'इण्डिया', 'सूर्योदयम', 'कर्मयोगी' आदि तमिल पत्रों तथा 'बाल भारत' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक के सम्पादन में भी सहयोग किया। अंग्रेज शासन के विरुद्ध स्वराज्य सभा के आयोजन के लिए भारती को जेल जाना पड़ा। कोलकाता जाकर उन्होंने बम बनाना, पिस्तौल चलाना और गुरिल्ला युद्ध का भी प्रशिक्षण लिया। वे गरम दल के नेता लोकमान्य तिलक के सम्पर्क में भी रहे। एक बार भारती ने नानासाहब पेशवा को मद्रास में छिपाकर रखा। शासन की नजर से बचने के लिए वे पाण्डिचेरी आ गये और वहाँ से स्वराज्य साधना करते रहे। निर्धन छात्रों को वे अपनी आय से सहयोग करते थे। 1917 में वे गांधी जी के सम्पर्क में आये और 1920 के असहयोग आन्दोलन में भी सहभागी हुए। स्वराज्य, स्वभाषा तथा स्वदेशी के प्रबल समर्थक इस राष्ट्रप्रेमी कवि का 12 सितम्बर, 1921 को मद्रास में देहान्त हुआ।

जगजीत ने जग को दिखाई राह

पंजाब के मानसा जिले के गाँव मूसा के सरकारी विद्यालय के शिक्षक जगजीत सिंह ने विद्यालय की सूरत निखार कर न केवल पंजाब, बल्कि देशभर के सामने गुरू के गुरुतर दायित्व का एक असाधारण एवं अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। बंद होने की कगार पर पहुँच चुके विद्यालय को अपनी मेहनत और लगन से उसे राज्य के आदर्श विद्यालयों की श्रेणी में पहुँचा दिया। उन्होंने बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद और रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ा। बच्चों की रुचि बढाने के लिए उन्होंने भांगड़े का सहारा लिया। उन्होंने अपने अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर विद्यालय के ढांचागत विकास पर कार्य शुरू किया। इस कार्य के लिए उन्होंने गाँव के लोगों से चन्दा इकठ्ठा किया। स्वयं और सहयोगियों के आर्थिक सहयोग से विद्यालय की काया ही पलट गई। आज उनके विद्यालय में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों के लिए अलग-अलग शौचालय, स्मार्ट क्लास, कंप्यूटर लैब, लाइब्रेरी, खेल का मैदान, प्रयोगशाला और एजुकेशनल पार्क भी है। पंजाब सरकार ने जगजीत सिंह को उनके प्रयासों के लिए सम्मानित भी किया है।

(पांचजन्य से साभार)

विश्राम सदनों में अगस्त-2022 में आने वाले नए रोगी व सहायक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर			7		6	13
2	हिमाचल प्रदेश					2	2
3	पंजाब			7			7
4	हरियाणा			22	1	189	212
5	दिल्ली	2	2	12	5	77	98
6	उत्तराखंड	8		29		17	54
7	उत्तर प्रदेश	1519	818	210	3	250	2800
8	बिहार	1058	43	300	2150	50	3621
9	झारखण्ड	124	2	33	26	9	194
10	सिक्किम						
11	नागालैंड						
12	असम	4		3		1	8
13	मणिपुर /मिजोरम					2	2
14	अरुणाचल प्रदेश	3					3
15	त्रिपुरा			5			5
16	मेघालय					1	1
17	प. बंगाल	14		24	4	5	47
18	ओडिशा/अंदमान	9		7			16
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना				2		2
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी						
21	कर्नाटक						
22	केरल						
23	महाराष्ट्र /गोवा	3	4				7
24	मध्य प्रदेश	60	4	56		20	140
25	छत्तीसगढ़	4		4	2	1	11
26	गुजरात	2		1			3
27	राजस्थान			42		23	65
28	अन्य						
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	18	3	24	5	3	53
30	बांग्लादेश						
31	अन्य देश						
	योग (इस मास)	**2828**	**876**	**786**	**2198**	**656**	**7344**
	योग (अप्रैल 22 - मार्च 23)	**14968**	**4149**	**3454**	**9865**	**2908**	**35344**
	एक दिन की औसत उपस्थिति	**366**	**132**	**264**	**252**	**211**	**1225**

RNI No. UPHIN/2005/15853

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	अगस्त	अप्रैल 22 से
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	46	101
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	130	620
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	28	205
अम्बेडकर नगर	33	154
माधव सेवा आश्रम	19	55
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	645	2156
होम्योपैथिक	322	1409
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	226	1075
कुल लाभान्वित रोगी	**1449**	**5775**

नेत्र चिकित्सा (अगस्त)

	देवड़े नेत्र चिकित्सालय लखनऊ	अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	योग (अप्रैल 2022 से)
नेत्र परीक्षण	638	3885	9543
चश्मा वितरण	342	3164	6947
मोतियाबिंद ऑपरेशन	3	0	80
Fundus Test	0	0	48
OCT Test	0	0	6
पैथोलॉजी	230	0	1001

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जाँच केवल 20 रूपये के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ. पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती सीमा अग्रवाल	9335922353
सामाजिक विज्ञानं एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू. , लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवडे नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स , दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई. जी. आई. एम. एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन , ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952
अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी